सामाजिक परिवर्तन एवं विकास का समाजशास्त्र

शीर्षक-भूमंडलीकरण के आर्थिक , सामाजिक एवं सांस्कृतिक आयाम

प्रस्तुतकर्ता-
डॉ सत्या मिश्रा
प्रोफेसर
समाजशास्त्र विभाग
नारी शिक्षा निकेतन स्नातकोत्तर महाविद्यालय, लखनऊ

उद्देश्य-भूमंडलीकरण के विविध आयामों का आलोचनात्मक मूल्यांकन तथा व्याख्या

प्रस्तावना (भूमंडलीकरण का अर्थ /परिभाषा / विशेषताएं

- वस्तुओं, सेवाओं, पूंजी और विचारों का वैश्विक प्रवाह।
- एन्थनी गिडिन्स के अनुसार: "दूरस्थ स्थानों के बीच सामाजिक संबंधों का घनीकरण।
- "समय और स्थान का संकुचन (Time-Space Compressioवस्तुओं, सेवाओं, पूंजी और विचारों का वैश्विक प्रवाह।
- एन्थनी गिडिन्स के अनुसार: "दूरस्थ स्थानों के बीच सामाजिक संबंधों का घनीकरण।"
- समय और स्थान का संकुचन (Time-Space Compression/ Time-Space Distanciation)
- पूंजीवाद, तकनीकी एवं शांति की राजनीति
- पूंजीवाद, अंतर्राज्यव्यवस्था, सैन्यवाद,उद्योगवाद
- नए बाज़ार ,नए उपकरण,नए कर्ता ,नए नियम

भूमंडलीकरण का इतिहास

1-भूमंडलीकरण विश्व के लिए नवीन प्रघटना नहीं ।

2- लगभग 2000 वर्ष पूर्व वृहद स्तर पर वैश्विक अंतर्क्रियाएँ घटित हो रही थीं ।

3- प्रसारवाद ने संस्कृति के वैश्विक आदान - प्रदान को जन्म दिया था ।

4- विभिन्न देशों के मध्य सर्वदा से अंतर्क्रियाएँ होती रही हैं ।

5- व्यापारिक क्रांति ने पूर्व- मध्यकालीन यूरोप में आर्थिक गतिविधियों को वैश्विक रूप दिया ।

6- वर्तमान भूमण्डलीकरण 1990 के दशक में उत्पन्न हुआ ।

भूमंडलीकरण की समानार्थी/संबंधित अवधारणाएँ

1- वैश्विक गाँव (Global Village)

(प्रतिपादक - मार्शल मैक्लूहान)

2- वैश्विक नगर (Global City)

(प्रतिपादक- सस्किया ससेन)

भूमंडलीकरण के आयाम

1- आर्थिक आयाम

2- सामाजिक आयाम

3- सांस्कृतिक आयाम

4- राजनीतिक आयाम

5- संचार तथा प्रौद्योगिकीय आयाम

आर्थिक आयाम (Economic Dimension)

बाजारवाद: मुक्त व्यापार और बहुराष्ट्रीय कंपनियों (MNCs) का प्रभुत्व।

श्रम का विभाजन: उत्पादन का वैश्विक स्तर पर विकेंद्रीकरण।

पूंजीवाद का विस्तार: स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं का वैश्विक बाजार से जुड़ाव।

असमानता: अमीर और गरीब देशों के बीच बढ़ती आर्थिक खाई।

उदारीकरण एवं निजीकरण ।

विदेशी निवेश में वृद्धि।

तकनीकी विकास एवं रोजगार में वृद्धि ।

वैश्विक बाजार का विस्तार

सामाजिक आयाम (Social Dimension)

नया सामाजिक वर्ग: वैश्विक मध्यम वर्ग का उदय।

प्रवास: रोजगार और शिक्षा के लिए सीमाओं के पार जनसांख्यिकीय बदलाव।

संस्थागत परिवर्तन: परिवार, विवाह और समुदाय के पारंपरिक स्वरूपों में बदलाव।

नागरिक समाज: एमनेस्टी इंटरनेशनल जैसे वैश्विक गैर-सरकारी संगठनों (NGOs) की बढ़ती भूमिका।

परिवार संरचना में परिवर्तन।

शहरीकरण एवं प्रवासन।

महिला सशक्तिकरण।

शिक्षा एवं जीवन शैली में परिवर्तन।

सांस्कृतिक आयाम (Social Dimensions)

1- सांस्कृतिक समरूपता।

2- 'मैकडोनाल्डीकरण' (McDonaldisation) और पश्चिमीकरण।

3- सांस्कृतिक संकरण (Hybridization): 'ग्लोकलाइजेशन' (Glocalization), वैश्विकऔर स्थानीय का मिश्रण।

4-पहचान का संकट: वैश्विक संस्कृति के कारण स्थानीय भाषाओं और परंपराओं

ह्रास।

5- उपभोक्तावाद: संस्कृति का बाजारीकरण और दिखावटी उपभोग।

भारतीय समाज पर प्रभाव

(सकारात्मक /नकारात्मक)

मध्यम वर्ग का विस्तार।

डिजिटल अर्थव्यवस्था का विकास।

युवाओं में वैश्विक दृष्टिकोण।

ग्रामीण-शहरी अंतर में वृद्धि।

आर्थिक असमानता में वृद्धि।

स्थानीय उद्योगों पर संकट।

श्रमिक शोषण एवं अस्थायी रोजगार।

कृषि क्षेत्र पर नकारात्मक प्रभाव।

निष्कर्ष

भूमंडलीकरण बहुआयामी एवं जटिल प्रक्रिया है।

विकास के साथ चुनौतियाँ भी उत्पन्न हुई हैं ।

संतुलित एवं मानवीय दृष्टिकोण आवश्यक।

सांस्कृतिक संरक्षण एवं सामाजिक न्याय पर बल

धन्यवाद